The Poona Horse

The Poona Horse Regiment was raised on 15 July 1817 at Sirur near Pune and will be completing its 200 years of raising in July 2017. The Poona Horse which has the distinction of being one of the most decorated regiments in the Indian Army will complete 200 glorious years in 2017.

The Poona Horse as its exists today is an amalgamation of two of the finest cavalry regiments of the erstwhile Bombay Presidency. The forebears of the Poona Horse were raised as part of an auxiliary force, for service in the territory of the Peshwa. The regiment was not yet fully raised when it was blooded in the battle of CORYGAUM. A small detachment of 300 horsemen was pitted against 28600 horsemen and foot soldiers and successfully resisted the adversary. The Regiment has never looked back since. In 1820, also at Sirur, was raised the 3rd Bombay Light Cavalry.

In 1856, the Shah of Persia invaded Afghanistan. The Poona Horse and the 3rd Bombay Light Cavalry were both part of the expeditionary force. This was the first occasion when the sheer weight, momentum and daring of a cavalry charge broke up the Infantry square. The Poona Horse annihilated the Persian 1st Khusgai Regiment (who were the Shah's bodyguards), spiked their guns and captured their Standard which dates back to AD 1066.

Lt AT Moore & JG Malcolmson were awarded VC during the battle of KOOSHAB. In 1858 Lt H.E. Wood (later Field Marshal) was awarded the 3rd Victoria Cross and during World War-I, Lt FA De Passe was awarded the 4th Victoria Cross posthumously.

On Independence, the Kaimkhani Squadron opted for Pakistan and their place was taken by the Sikh squadron of the 13th Lancers, who soon became a part and parcel of the Regiment and imbibed the 'PH Spirit'. The regiment played a stellar role in the Hyderabad Police action immediately after partition in 1948.

On 8th September 1965, the Regiment spearheaded the Indian advance into Pakistan. The Regiment cleared the stronghold of Phillora after a gruelling close range battle with enemy Patton Tanks. At the end of the day, 23 enemy tanks lay scattered, mauled and burning on the battle fields- a tribute to the grit, daring and dash of the Regiment. This battle was the fiercest tank battle fought since the Second World War and broke the back of the Pakistani 6 Armoured Division. The Commandant Lt Col AB Tarapore was martyred in action on 16 September 1965. It was a matter of great pride and honour for the regiment that he was posthumously awarded the Param Vir Chakra, the first in Indian Armoured Corps and the only one at that time. By the end of the war the Pakistanis started to refer to the regiment as Fakhr-E-Hind (The Pride of India). The regiment emerged as the only unit to be awarded two battle honours- PHILLORA and BUTUR-DOGRANDI, one Param Vir Chakra, two Vir Chakras, five Sena Medals, twelve Mentioned-in-Despatches and six Commendation Cards.

In the historic Battle of Basantar, 2nd Lt Arun Khetarpal showed his grit and determination to destroy enemy armour against all odds. He destroyed tank after tank till his own tank was hit. A grateful nation bestowed the Param Vir Chakra posthumously on him. At the end of that day, 56 enemy tanks lay in ruins. The Poona Horse was awarded the battle honour of BASANTAR. The gallantry awards won were one Param Vir Chakra, two Maha Vir Chakras, three Vir Chakras, three Sena Medals and ten Mentioned-in-Dispatches.

Department of Posts is proud to release a Commemorative Postage Stamp on The Poona Horse on the occasion of Bicentenary of its raising.

Credits:-

Text	:	Based on the material received from proponent
Stamp / FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Smt. Alka Sharma

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



दी पूना हॉर्स
THE POONA HORSE

विवरणिका BROCHURE

दी पूना हॉर्स

पूना हॉर्स रेजिमेंट की स्थापना 15 जुलाई, 1817 को पूना के निकट सिरूर में की गई थी। यह रेजिमेंट जुलाई, वर्ष 2017 में अपनी स्थापना के शानदार 200 वर्ष पूरे करेगी। पूना हॉर्स, भारतीय सेना की सर्वाधिक सुसज्जित रेजिमेंटों में से है।

पूना हॉर्स का मौजूदा स्वरूप, तत्कालीन बॉम्बे प्रेसिडेंसी की दो बेहतरीन अश्वारोही रेजिमेंटों का समामेलित रूप है। आरंभिक चरण में पूना हॉर्स को पेशवा के राज्य में सेवा प्रदान करने के लिए सहायक बल के रूप में तैयार किया गया था। यह रेजिमेंट अभी पूरी तरह स्थापित भी नहीं हो पाई थी, जब इसे कोरेगांव के युद्ध में शामिल होना पड़ा था। 300 अश्वारोहियों की एक छोटी सी टुकड़ी ने 28600 अश्वारोहियों और पैदल सैनिकों का डटकर मुकाबला किया और शत्रुओं को परास्त किया। उस समय से, यह रेजिमेंट निरंतर आगे बढ़ती गई। वर्ष 1820 में, सिरूर में ही तृतीय बॉम्बे लाइट कैवलरी की स्थापना की गई।

वर्ष 1856 में फारस के शाह ने अफगानिस्तान पर आक्रमण किया। पूना हॉर्स और तृतीय बॉम्बे लाइट कैवलरी, दोनों ही इस अभियान बल का हिस्सा थे। यह पहला मौका था जब अपनी अश्वारोही सेना की बहादुरी, जोर और साहस के बल पर यह रेजिमेंट पैदल सेना के व्यूह को तोड़ने में सफल रही। पूना हॉर्स ने वर्ष 1066 में फारस की प्रथम खुसगई रेजिमेंट (जो शाह के अंगरक्षक थे) को बुरी तरह परास्त किया, उनकी बंदूकों को नष्ट किया और उनके ध्वज पर कब्जा कर लिया।

कुशाब के युद्ध में ले. एटी मूर और जेजी मैलकमसन को विक्टोरिया क्रॉस प्रदान किया गया। वर्ष 1858 में ले. एच. ई. वुड (बाद में फील्ड मार्शल) को तृतीय विक्टोरिया क्रॉस प्रदान किया गया और प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ले. एफए डि पासे को मरणोपरांत चौथा विक्टोरिया क्रॉस प्रदान किया गया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कैमखानी स्क्वॉड्रन ने पाकिस्तान का चयन किया और उनकी जगह 13वीं लान्सर्स की सिख स्क्वॉड्रन ने ली, जो जल्द ही इस रेजिमेंट का अभिन्न अंग बन गई और 'पीएच भावना' को अपना लिया। विभाजन के तुरंत पश्चात वर्ष 1948 में हैदराबाद पुलिस कार्रवाई में इस रेजिमेंट ने मुख्य भूमिका निभाई।

08 सितम्बर, 1965 को इस रेजिमेंट की अगुवाई में भारतीय सेना पाकिस्तान के इलाके में काफी अंदर तक घुस गई। इस रेजिमेंट ने दुश्मनों के पैटन टैंकों के साथ घमासान युद्ध के बाद फिल्लौरा के गढ़ को अपने कब्जे में ले लिया। शाम होते-होते युद्ध के मैदान में दुश्मन के 23 टैंकों को ध्वस्त कर दिया गया था, जो इस रेजिमेंट की निर्भीकता, जोश और संघर्ष को एक श्रद्धांजलि भी है। यह युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध के बाद लड़ा गया सबसे भीषण युद्ध था, जिसके परिणामस्वरूप पाकिस्तान की 6 आरमर्ड डिवीजन की कमर टूट गई। 16 सितम्बर, 1965 को कमांडेंट ले. कर्नल ए बी तारापोर इस लड़ाई में वीरगति को प्राप्त हुए। मरणोपरांत उन्हें परमवीर चक्र प्रदान किया गया जो कि इस रेजिमेंट के लिए अत्यधिक गर्व और सम्मान का विषय था। भारतीय आरमर्ड कोर को पहली बार यह सम्मान प्रदान किया गया। उस समय यह एकमात्र पुरस्कार था। युद्ध समाप्त होते-होते पाकिस्तानियों ने इस रेजिमेंट को फख्र-ए-हिंद (भारत का गौरव) कहना शुरु कर दिया था। यह ऐसी पहली रेजिमेंट थी जिसे दो युद्ध सम्मानों - फिल्लौरा और बुटुर-डोगरांडी, एक परमवीर चक्र, दो वीर चक्र, पाँच सेना मेडल, बारह मेंशन-इन-डिस्पैच और छः प्रशस्ति पत्रों से पुरस्कृत किया गया।

बसंतर के ऐतिहासिक युद्ध में, सेकेंड ले. अरुण खेत्रपाल ने विषम परिस्थितियों के बावजूद, धैर्य और दृढ़ता का परिचय देते हुए दुश्मन के कवच को नष्ट किया। वे, एक-एक करके दुश्मन के टैंक नष्ट करते गए, जब तक कि उनका टैंक क्षतिग्रस्त नहीं हो गया। कृतज्ञ राष्ट्र ने उन्हें मरणोपरांत परमवीर चक्र प्रदान किया। उस एक दिन के अंदर दुश्मन के 56 टैंकों को ध्वस्त किया गया। पूना हॉर्स को बसंतर का युद्ध सम्मान प्रदान किया गया। जीते गए वीरता पुरस्कारों में, एक परमवीर चक्र, दो महावीर चक्र, तीन वीर चक्र, तीन सेना मेडल और दस मेंशन-इन-डिस्पैच शामिल हैं।

डाक विभाग, दी पूना हॉर्स पर इसकी स्थापना के दौ सौ वर्ष पूरे होने के अवसर पर, एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभारः-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/ विवरणिका/ विरूपण	:	श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: :	403640 403640
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00